





- (36) सरफराज पिता शफी मोहम्मद कोसारीया  
 (37) मुकद्दर पिता सिकन्दर खॉ मंसुरी  
 (38) जावेद पिता शोकत उर्फ मडु मंसुरी  
 (39) कय्युम पिता छोटे खॉ मंसुरी  
 (40) आशीक पिता अनवर मंसुरी  
 (41) जावेद पिता इस्माईल मंसुरी  
 (42) शफी पिता अशफाक मंसुरी  
 (43) साबीर पिता इकबाल मंसुरी  
 सभी निवासी सिलकुआ तहसील-डहीं जिला-धार  
 (44) कमल पिता घीसालाल गर्ग  
 सचिव ग्राम पंचायत सिलकुआ, जनपद पंचायत डहीं जिला धार  
 (45) कैलाश पिता उमराव पटेल,

सरपंच ग्राम पंचायत सिलकुआ, जनपद पंचायत डहीं जिला धार — अनावेदक गण

विषय :— रिक्हीजन धारा 50 (1) मध्यप्रदेश भू-राजस्व संहिता 1959 के अन्तर्गत

माननीय महोदय,

सेवा, में आवेदक, निम्न अनुसार रिक्हीजन प्रस्तुत करता है कि :—

आवेदक, न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी महोदय, (राजस्व) कुक्षी जिला-धार के न्यायालय के प्रकरण क्रमांक 10/2011-12/अपील में दिनांक 13-04-2012 को पारित आदेश के विरुद्ध यह रिक्हीजन नियत न्याय शुल्क पर प्रस्तुत करता है। अधिनस्थ न्यायालय ने दिनांक 13-4-2012 को आदेश परित किया। आदेश की प्रमाणित प्रतिलिपि के लिये आवेदन पत्र दिनांक 28-4-2012 को प्रस्तुत किया, आदेश की प्रमाणित प्रतिलिपि दिनांक 30-6-2012 को प्राप्त हुई। नकल मिलने के दिन मुजरा करते हुए यह रिक्हीजन नियत अवधि मे प्रस्तुत है। अधिनस्थ न्यायालय के आदेश की सत्य प्रमाणित प्रतिलिपि संलग्न प्रस्तुत है।





न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश-ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक निगरानी 2959-पीबीआर/12

जिला धार

स्थान तथा दिनांक


कार्यवाही तथा आदेश

पक्षकारों एवं अभिभाषकों  
आदि के हस्ताक्षर

7/2/17

आवेदक एवं अनावेदक क्रमांक 2, 5, व 7 के विद्वान अभिभाषक द्वारा प्रस्तुत तर्कों के संदर्भ में अभिलेख का अवलोकन किया गया । प्रकरण में अभी ग्राह्यता पर भी निर्णय होना है । अनुविभागीय अधिकारी के आदेश दिनांक 13-4-12 को देखने से स्पष्ट है कि उनके द्वारा अन्तिम प्रकृति का आदेश पारित किया गया है । अनुविभागीय अधिकारी द्वारा पारित अंतिम आदेश के विरुद्ध म.प्र. भू-राजस्व संहिता, 1959 (जिसे संक्षेप में संहिता कहा जायेगा) की धारा 44 के अन्तर्गत द्वितीय अपील आयुक्त के समक्ष प्रस्तुत किये जाने का प्रावधान है, अंतिम आदेश के विरुद्ध संहिता की धारा 50 के अन्तर्गत निगरानी प्रतिबंधित है । अतः यह निगरानी विधि अनुसार प्रस्तुत नहीं किये जाने के कारण अग्राह्य की जाती है ।



  
(मनोज गौयल)  
अध्यक्ष